सफलता की कहानियाँ

शाश्वत सहभागी संस्थान

प्रस्तावना

शिक्षा वर्तमान में प्रत्येक वर्ग एवं उसके स्वयं के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। बिना शिक्षा एवं स्वास्थ के मानव आदर्श जीवन की कल्पना नहीं कर सकता।

देश की आजादी के 65 साल बाद भी सरकार शिक्षा एवं स्वाथ्य के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है। फिर भी आवश्यकता के अनुसार हमारा भारत शिक्षा में काफी पीछे है। इसके लिए सरकार के साथ - साथ हमारा समुदाय भी काफी हद तक जिम्मेदार है। शाश्वत सहभागी संस्थान जो कि एक स्वेच्छिक संगठन है, जो जनपद सीतापुर के विकास खण्ड गोदलामऊ में बच्चों / किशोरियों की शिक्षा, स्वास्थ, जन्म, मृत्यु, समुदाय के अधिकारों के लिये कार्य कर रहा है।

संस्थान द्वारा गोदलामऊ के ग्रामीण क्षेत्रों में अवलोकन के आधार पर देखा गया कि यहां की वर्तमान स्थिति में शिक्षा एवं स्वास्थ का स्तर काफी गिरा हुआ है जिसमें पुरूषो की तुलना में महिलायों किशोरियों का स्तर 30 प्रतिशत है जो किसी भी देश के लिए एक अच्छा संकेत नही माना जा सकता है।

संस्थान द्वारा कई स्तरों पर अवलोकन कर जानकारी प्राप्त की गई सन् 2008 में सरकारी एवं संस्थान के निजी आंकडों के अनुसार गोदलामऊ ब्लाक में अन्य की अपेक्षा स्कूल से दूर, स्कूल छोड़े तथा अनियमित बच्चों की सख्या 2046 एवं किशोरी संख्या 639 थी। इसी के मद्दे नजर रखते हुए गोदलामऊ की 25 ग्राम पंचायतों के 146 गॉवों में बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाया गया जिसमें समुदाय, सरकारी अधिकारियों के साथ-साथ टाटा, सोसल बेलफेयर ट्रस्ट का योगदान रहा है।

परियोजना क्षेत्र में कुल प्रा0 वि0 43 एवं उच्च प्राथमिक वि0 संख्या 23 है।

बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत बच्चों को गतिविधि आधारित गुणात्मक शिक्षा के साथ तैयार कर मुख्य धारा से जोडने एवं 12-18 वर्ष की किशोरियों की व्यक्तिगत स्वच्छता एवं शिक्षा के प्रति तैयार कर मुख्यधारा से जोडने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा निःशुल्क एवं अनिवार्य बालशिक्षा अधिकार अधिनियम सन् 2009 में बच्चों के अधिकार एवं अभिभावकों को कार्य दायित्वों का शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

बच्चों को स्वतंत्र आनन्ददायी शिक्षा उपलब्ध हो जिसके तहत संस्था की ओर से परियोजना क्षेत्र को 10 कलस्टरो में बाटकर पुरूष और महिला शिक्षको के द्वारा शिक्षण कार्य किया जा रहा है। जिसमें परियोजना क्षेत्र के स्कूल भी है। यहॉ पर बच्चों को केन्द्र मानकर उनकी सीख हेतु गतिविधि कार्य करने एवं लिखने एवं सिखाने का कार्य किया गया है।

परियोजना क्षेत्र के प्रा0 एवं उच्च प्रा0 वि0 में बनी स्कूल प्रबन्ध समिति के सदस्यों को प्रशिक्षण देने का कार्य भी संस्थान की ओर से किया गया है जिसमें अभिभावक एवं सरकारी विभाग का काफी योगदान रहा है।

प्रस्तुत केस स्टडी संकलन में संस्था द्वारा किये गये प्रयास और उनसे निकलने वाले परिणामों जिसमें सख्यात्मक एवं गुणात्मक उपलब्धियों के साथ-साथ सफलता की कुछ खास कहानियों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह संकलन परियोजना क्रियान्वयन टीम, संस्था, समुदाय तथा अकंहित भागियों के लिये प्रोत्साहक बनेगी।

धन्यवाद

शाश्वत सहभागी संस्थान
मिश्रिख, सीतापुर

विषय सूची

क्रम	विषय	पृ.सं.
1	कार्यक्रम की उपलब्धियाँ	2
2	गाँधी लाये कस्तूरबा गाँधी	5
3	ऐनी की हुई नजर पैनी	7
4	घूंघट में भी शिक्षा	9
5	थाली का घी थाली में	11
6	शीलू ने लगाई छलाग	13
7	सुदामा की कोशिश का रंग ऐसा	15
8	हमें न समझो छोटा बच्चा	17
9	जागे गये अभिभावक	20
10	पाठशाला - खुल गया ताला	21
11	जीवन की नई राह पर	24
12	किशोरी केन्द्र बना परिवर्तन का घर	26
13	रामदेवी कर सकी पहल	28
14	सरस्वती बनी नाम का पर्याय	30
15	चौसठ साल बाद टूटा रिकार्ड	32
16	कोशिश से बदली तस्वीर	34

कार्यक्रम की उपलब्धियाँ

प्रमुख संख्यात्मक उपलब्धियां इस प्रकार है।

	उपलब्धियाँ	संख्या
1	प्राथमिक शिक्षा	
1.1	परि योजना क्षेत्र में कुल बाल केन्द्रो की संख्या	40
1.2	परियोजना क्षेत्र में कुल जुडे बच्चों की संख्या	1653
1.21	लडकियां	838
1.2	लडके	815
1.3	परियोजना क्षेत्र में स्कूल से दूर बच्चे जिनको बाल केन्द्र में जोडा गया	979
1.3.1	लडकिया	485
1.3.2	लडके	499
1.4	परियोजना क्षेत्र में समुदाय के माध्यम से तैयार कर नामांकित कराये गये बच्चे	566
1.5	परियोजना क्षेत्र की कुल किशोरी केन्द्रो की संख्या	40
1.6	परियोजना क्षेत्र की कुल किशोरियों जिनको गुणात्मक शिक्षा हेतु नामांकित किया गया	881
1.7	परियोजना क्षेत्र को शिक्षा से दूर वास्तविक बच्चे जिनको अतिरिक्त सहयोग के माध्यम से तैयार किया गया।	2159
1.7.1	लडकियां	14459
1.7.2	लडके	700

बच्चों की सीख के स्तर अनुसार

1	परियोजना क्षेत्र में प्राथमिक दक्षता हेतु तैयार किये गये बच्चे	929
2	परियोजना क्षेत्र अग्रणी दक्षता हेतु तैयार किये गये बच्चे	724
3	परियोजना क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में नामाकित बच्चों के साथ गुणवत्ता सुधार हेतु कार्य किया गया ।	38

4	परियोजना क्षेत्र में कार्यक्रम में सहयोग हेतु अध्यापक, अभिभावक एवं अन्य सकारात्मक सोच के लोग जोडे गये और तैयार किये गये	2967
5	प्रशिक्षण एवं सीख प्रक्रिया अवलोकन हेतु	
5.1	परियोजना क्षेत्र में व्यक्तिगत विवरण की जांच कर व्यक्तिगत फाईल का निमार्ण किया गया ।	1653
5.2	परियोजना क्षेत्र में बच्चों के प्रदर्शन को एवं सीख को अवलोकन किया गय	1296
5.3	अध्यापको के पास पाठ्य योजना का रिकार्ड	80
5.4	सहायक शिक्षण सामग्री सामग्री का निर्माण प्रकार	23
5.5	परियोजना क्षेत्र के वे केन्द्र/स्कूल जहॉ कक्षा में बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार किया जाता है।	53
5.6	परियोजना क्षेत्र के वे केन्द्र / स्कूल जहॉ बच्चों के आधारित सीख का कार्य किया जा रहा है।	41
5.7	बालिका शिक्षा कार्यक्रम में कुल सदस्य	25

परियोजना क्षेत्र की गुणात्मक उपलब्धियां इस प्रकार है :

1. परियोजना क्षेत्र में स्कूल से दूर 1653 बच्चों को जिसमें 838 लड़किया एवं 815 लडकों को 40 बाल केन्द्र के माध्यम से गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से तैयार किया गया है।
2. परियोजना क्षेत्र 979 बच्चे जो शिक्षा से दूर है। उनको सत्र 2008-09 , 2009-2010 , 2010-2011 में बालकेन्द्रो के माध्यम से तैयार कर सरकारी विद्यालयों में नामांकित कराया गया है।
3. परियोजना क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों में नामाकित कराये गये 979 बच्चों में 785 बच्चों में 81.18 प्रतिशत बच्चे ठहराव की स्थिति में रहकर सीख रहे है।
4. परियोजना क्षेत्र में जागरूकता सप्ताह के दौरान सामुदाय को तैयार कर 566 बच्चों का सरकारी विद्यालयों में नामाकित कराया गया है।
5. परियोजना क्षेत्र के लगभग 30 ऐसे अगुवाकारो को पशिक्षण के माध्यम से तैयार किया गया है। ताकि वह स्कूलों में गुणात्मक शिक्षा हेतु दबाव समूह और निगरानी समूह के रूप में कार्य करने के साथ साथ जवाब देह बनाने का कार्य किया गया है।

6. परियोजना के अर्न्तगत 881 किशोरियों सत्र 2008 से 2012 तक किशोरी केन्द्र के माध्यम से शिक्षा के साथ साथ व्यक्तिगत स्वच्छता को सीखने / सिखाने का प्रयास किया गया है। ताकि उनके जीवन स्तर में सुधार हो जिसमे अधिकतर लडकियां ग्रह कार्य की वजह से शिक्षा क्षेत्र में पिछडी है। इसी में परियोजना के क्षेत्रों के किशोरी केन्द्रों पर आने वाली 317 किशोरियां जो शिक्षा से दूर है। उनकी कुशलता एवं दक्षता के आधार पर सरकारी विद्यालयों में नामाकित कराया गया है।

7. सभी लडकियों में लगभग 90 प्रतिशत का ठहराव हुआ है। और सीखने का कार्य कर रही है। जिसमें 96 किशोरियां कक्षा 8 की बोर्ड परीक्षा में सामिल हुई और सफल भी हुई है। 18 लडकियां अग्रीम दक्षता हेतु कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में सामिल हुई है। और सभी लडकियां सफल भी हुई है।

8. परियोजना क्षेत्र के किशोरी केन्द्रो में आने वाली अधिक से अधिक किशोरियां जो कार्यक्रम के माध्यम से जीवन की आवश्यकताओं के आधार पर नये तरीके से तैयार हुई है। उन्होने स्वयं संगठित होकर संगठन के माध्यम से बचत कर रही है। धीरे - धीरे नियमित रूप से स्कूल जा रही है।

9. परियोजना क्षेत्र में कुछ किशोरिया जिनको तैयार किया गया है। स्वयं से तैयार होकर ग्राम पंचायत के अन्य लडकियों के साथ निःशुल्क शिक्षण का कार्य कर रही है। जिसमें अधिकतर लडकियों के साथ साप्ताहिक शिक्षा , स्वस्थ्य एवं परिवारिक जीवन कौशल की चर्चा के साथ सिखाने का कार्य किया जा रहा है।

10. परियोजना क्षेत्र की 881 किशोरियां किशोरी केन्द्र के माध्यम से व्यक्तिगत स्वच्छता एवं संकृमित होने से बचने की जानकारी ले रही है। जिसमे 40 प्रतिशत किशोरिया व्यक्तिगत स्वच्छता को सकारात्मक दृश्टि से अपनाती है। और अपनी हम उम्र लडकियो के साथ खुलकर चर्चा करती है। इसके साथ साथ ये लडकियां लिंग असमानता को लेकर अपने माता पिता से प्रश्न करने लगी है।

कार्यक्रम के अर्न्तगत सरकारी विद्यालयो के अध्यापक सकारात्मक नजरिये से सहयोग कर रहे है। एवं परियोजना के अध्यापक लगभग 20 सरकारी विद्यालयो में आनन्ददायी शिक्षा पद्धति के अर्न्तगत पढाने एवं सहयोग करने का कार्य कर रहे है। परियोजना क्षेत्र के 20 विद्यालयों में सघन रूप से शिक्षण कार्य किया जा रहा है। इसके साथ साथ 32 स्कूल में सहयोग करने का कार्य किया जा रहा है।

1. गॉधी लाये कस्तूरबा गॉधी :

नाम का असर इंसान के व्यक्तित्व पर पड़ता है। इसको सिद्ध कर दिखाया ग्राम ब्रम्हावली जो जनपद सीतापुर के ग्राम सभा करूवामउ के प्रधान पति अनिलकुमार मिश्र ने यहॉ की कुल आबादी लगभग 2200 है। जिसमे अनुसूचित जाति एवं पिछडा और सामान्य वर्ग के लोग निवास करते है। यहॉ के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। शिक्षा का स्तर काफी गिरा हुआ है। जो गोदलामउ विकास खण्ड में पिछडी सूची में प्रथम स्थान पर है। जिसमें बालिकाओं की दशा अत्यन्त दयनीय है। जिसमे आधे से ज्यादा लडकियों ड्राप आउट हो जाती है। लडकियो की शिक्षा एवं स्वास्थ में सुधार हो इस प्रयास मे शाश्वत सहभागी सस्थान द्वारा बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम की शुरूवात ग्राम सभा करूवामउ से की गई गांवों के सर्वे के अनुसार यहॉ कुल स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या 124 जिसमें 39 बालक एवं 85 बालिकाये है। तथा 12 से 18 वर्ष की किशोरियो की संख्या 60 है।

ग्राम पंचायत के 2011 - 012 के चुनाव की घोषणा होने पर शाश्वत को पहल करने का एक नया रास्ता नजर आया । जिसमें जन प्रतिनिधियों द्वारा मांगो का मसौदा नामक पम्पलेट में जिसमे शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया जिसके अन्तर्गत सभाओ का आयोजन शुरू हुआ। जिसमे शाश्वत कार्यकर्ताओ द्वारा गॉव-गॉव जाकर सभा एवं सम्पर्क के दौरान बालिका शिक्षा की ओर ध्यान केन्द्रित करने का कार्य किया जिसमे सभा, रैली और एस0एच0जी0 के साथ मिलकर एक आवाज में मांग करवाई ''यहॉ पर हर कोई किसी न किसी का भाई और किसी का बच्चा होगा। हम उसे ही चुनेगे जो मित्र हमारा सच्चा होगा।'' इस प्रयास में अन्य प्रतिनिधि भी मॉगों के मसौदे को मानने के लिये तैयार हुऐ और मतदाताओ ने अपने हको को ध्यान में रखते हुए मतदान किया जिसमे वर्तमान प्रधान को श्रीमती पुष्पा मिश्रा पत्नी अनिल कुमार मिश्र (गॉधीजी) ने कड़ी सिकस्त दी और चुनाव परिणाम में बिजयी घोषित हुई।

प्रधान पति अनिल कुमार उर्फ गॉधी जी बचपन से ही परोपकारी स्वभाव के थे। इसी परोपकरी भावना की बजह से लोगों द्वारा उन्हे गॉधी की उपाधि मिली जो वर्तमान में एक सरकारी कर्मचारी भी है। जिनके परोपकार की चर्चा पूरे ब्लाक में है। जिन्होने शाश्वत कार्यकर्ताओं एवं समुदाय के साथ मिलकर कार्य करने का अश्वाशन दिया था इसी बीच गाँधी जी का सम्पर्क यहॉ के वर्तमान सांसद अशोक कुमार रावत से सम्पर्क हुआ। गॉधी जी ने अपने क्षेत्र की वर्तमान बालिका शिक्षा व्यवस्था पर चर्चा की जिसके अर्न्तगत सांसद द्वारा कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय बनवाने का आश्वशन दिया और जनता से सहयोग की मांग की। क्योकी विधान सभा चुनाव सर पर था जिसके भावी प्रत्यासी सासद के भाई थे ।

गॉधी जी द्वारा सभी से एक जुट होने की मॉग की शाश्वत ने इस दिशा में भी समुदाय के साथ हर तरह के प्रचार - प्रसार में सहयोग किया । क्योकि यह मौका यहॉ की किशोरियों के भविष्य को सुधार करने की दिशा में एक किरण थी।

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय हेतु कई दिग्गजो ने अपना-अपना हत्थकन्डा अपनाना शुरू किया जिसमें शिक्षा से जुडे उच्च अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों को रिझाना शुरू किया। और नतीजन कस्तूरबा आवासीय विद्यालय का निर्माण प्रस्ताव दूसरे विद्यालय में हो गया। अब गॉधी जी के साथ सभी समुदाय को गहरा धक्का लगा। लेकिन साहस और इमानदारी के साथ पैरवी मे लगे रहे इसको लेकर कई बार गॉधी जी को सासद के घर एवं आफिस के चक्कर लगाने पडे। और उच्च अधिकारियों को भी पटाना पड़ा। अन्त में कठिन परिश्रम के बाद स्कूल को पास कराने में से सफल हुए विद्यालय का निर्माण कार्य शुरू हो गया। और मर्तमान समय में विद्यालय की इमारत बनकर तैयार हो आशा है जुलाई 2012 से इस आवासीय विद्यालय का शुभारम्भ हो जायेगा ।

आज इस विद्यालय के नाम से अन्य गॉवों के लोग भी अपने सहयोग को जोड़ना चाहते है। जिससे हजारो शिक्षा से वंचित लड़कियां अपने भविष्य को सवार सकेगी।

2. ऐनी की हुई नजर पैनी :

सीतापुर जनपद के गोदलामउ ब्लाक में रघुनाथपुर ऐनी ग्राम सभा है। यह ग्राम सभा मात्र दो गॉवो से मिलकर बनी है। इसी का एक गॉव ऐनी है । यह एक छोटा गॉव (पुरवा) है। यहॉ की कुल आबादी लगभग 500 है। इस गॉव में सभी व्यक्ति अनुसूचित जाति के है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि, पशु पालन एवं मछली पकडना है। यहॉ की 30 प्रतिशत महिलायें शराब बनाकर अपना जीवन यापन करती है। यहॉ बच्चों/ किशोरियों द्वारा माता पिता के कार्यो में मदद करना जिसमें शराब बेचना एवं बनाना भी सामिल है।

यहॉ स्कूल न जाने वाले कुल बच्चों की संख्या 38 जिसमें 15 किशोरियां शामिल है। जिनके उज्वल भविष्य की कल्पना करना कठिन है।

गॉव में एक पूर्व मा0 वि0 है। जहॉ कुल 85 बच्चे नामांकित है। जिसमें बच्चों के अनुसार शिक्षक मानक में रहकर गुणवक्ता पूर्ण शिक्षा देना मात्र कल्पना ही कहा जा सकता है। जिसमें एक अध्यापक के लिए 85 बच्चों को बिठा पाना और कागजी कार्यवाही का काम करना काफी है।

इसी बीच स्थानीय स्वेच्छिक संगठन शाश्वत सहभागी संस्थान जो शिक्षा, स्वास्थ पंचायत जैसे मुद्दो पर कार्य करने वाली संस्था है । जो वर्तमान समय मे बालिका शिक्षा के अर्न्तगत स्कूल न जाने वाले ड्राप आउट आफ स्कूल एवं इरेग्युलर 6 से 18 वर्ष के बालक एवं बालिकाओं को उनके स्तर के अनुसार तैयार कर मुख्य धारा से जोडने का कार्य कर रही है। जिसके माध्यम से 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिऐ बाल केन्द्र एवं 12 से 18 वर्ष की

किशोरियों को किशोरी केन्द्र के माध्यम से तैयार करने का प्रयास कर रही है। जिसके दोनो केन्द्र स्थिति के अनुसार ऐनी में है।

जिसमें सर्व प्रथम संस्थान के कार्य कर्ताओं द्वारा गॉव का सर्वे कर 40 बच्चे एवं 25 किशोरियों को चिन्हित किया और उनके अभिभावको से शिक्षा की उपयोग्यता को लेकर बैठके की गई और शिक्षा के वर्तमान महत्व को स्पष्ट किया गया। अभिभावको द्वारा अपूर्ण सहमति मिली ।

जिसके सहारे संस्थान कार्यकर्ताओं द्वारा बालकेन्द्र/किशोरी केन्द्र खोला गया जिसमें बच्चों एवं अभिभावकों से नियमित सम्पर्क किया जाने लगा और बच्चे / किशोरिया शिक्षा केन्द्र पर आने लगी। संस्थान की शिक्षा पद्धति में गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य जिसमें बच्चों की सीख का आकलन करना, भयमुक्त बातावरण बनाना रूचि के अनुसार शिक्षण कार्य एवं मित्रवत व्यवहार कर शिक्षण देना प्रमुख रूप से सामिल है।

उपरोक्त शिक्षण विदा के संचालन में अभिभावकों द्वारा आपत्ति एवं नियमित स्कूल न भेजना गृह कार्य में लगाने के कार्य को शाश्वत कार्यकर्ताओं द्वारा स्थित एवं सोच का अवलोकन करते हुए सकारात्मक लिया गया और शिक्षण कार्य में पाठ्य योजना बनाकर एवं सीख के अनुसार परिवर्तन एवं परिवेशीय वस्तुओं को टी0एल0एम0 में प्रयोग करना शुरू किया जिससे बालक/बालिकाए शिक्षण कार्य में रूचि लेने लगे और 6 व 7 मास में बच्चों की लगन शिक्षक की मेहनत एवं अभिभावको के सहयोग से कक्षा 1 बच्चा सरकारी विद्यालय के कक्षा 3 का मानक पूरा करने लगा। लगभग 50 प्रतिशत बच्चों को जोड़ घटाना गुणा भाग गिनती आरोही अवरोही सुनना समझना बोलना एवं अभिव्यक्त करने की क्षमता सीखी जिसमें गुणा को सरल तरह से समझाने के लिये तीलियो की जोडना और उसके कटान बिन्दु गिनना और वही संख्या का गुणा होना समझाया गया जिसमें बच्चों की मानक भाषा का भी ध्यान रखा गया साल के अन्त में 25 में 10 ड्राप आउट किशोरियों का दाखिला कक्षा 8 में हुआ और 5 किशोरियों 9 व 10 में शिक्षण कार्य कर रही है। और बर्तमान में वहॉ स्थित स्कूल के अध्यापक भी गतिविधि अनुश्रवण कर पारम्परिक पद्धति छोडकर गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य की शुरवात की जिसमें बच्चो का जुडाव बराबर बना रहा ।

3. घूंघट में भी शिक्षा :

जब जागो तभी सबेरा इस कहावत से सभी वाकिब है। शिक्षा नौकरी के लिये नही बल्कि जिन्दगी के लिये आवश्यक है। शिक्षा की पूर्ण परिभाषा एक दो वाक्यों मे देना असम्भव है। क्योकि इसके अन्दर जिन्दीगी का सार छुपा है।

शाश्वत सहभागी संस्थान महिला, बच्चों, किशोरियो के शिक्षा एवं स्वास्थ के लिये सन् 2002 से जनपद सीतापुर में कार्य कर रहा है। जिसके अर्न्तगत गोदलामउ ब्लाक का ऐ मजरा असरफ नगर है। जहॉ किशोरियों को केन्द्र के माध्यम से शिक्षा एवं व्यक्तिगत स्वछता के लिये जागरूक करने की कोशिश की जाती है। जिसमें उत्सुक होकर -

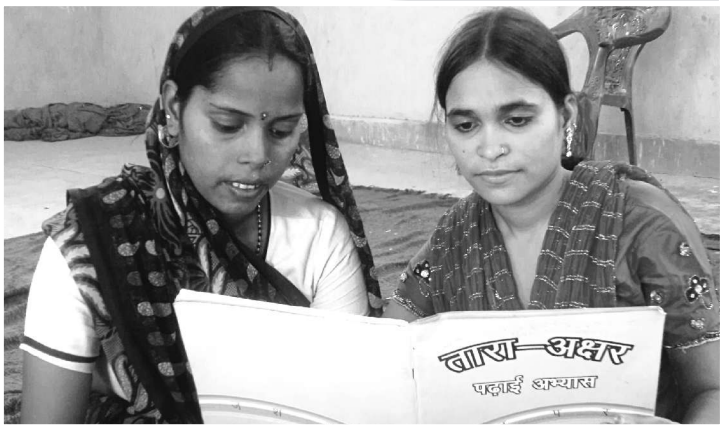

सरोजनी पत्नी संजय जी असरफ नगर की रहने वाली अनुसूचित जाति की महिला है। जिसकी उम्र लगभग 25 वर्ष है। पति किसानी का कार्य करते है। वह एक दिन सेन्टर पर आई और अनुदेशिका से सेन्टर पर पढ़ने की स्वीकृति मांगी और सेन्टर पर पढ़ने आने लगी शुरूवात में पति एवं परिवार के सदस्यों को बुरा लगा। और गॉव के लोगों द्वारा हंसी उड़ायी गयी। कि ''अब यहि पढिकय डीएम बनिहय'' इस तरह की मजाक आये दिन सरोजनी को सुनने को मिलने लगी लेकिन सरोजनी पर पढ़ने का भूत सवार था वह कहॉ मानने वाली थी। घूंघट निकाल कर सेन्टर नियमित रूप से आने लगी। सेन्टर पर किशोरियो के साथ बेहिचक पढ़ने का कार्य करने लगी सरोजनी हर काम में आगे रहने लगी और शिक्षा, स्वास्थ, पढना, लिखना, चित्र , कहानी, अभिनय, भाषण आदि में खुलकर भाग लेने लगी। बच्चो की देखभाल और पति के साथ साथ ससुर की सेवा के नियमित कार्य करने के बाद समय से नियमित रूप से पढ़ने आती ।

एक दिन सरोजनी शाम को होमवर्क में मिला काम कर रही थी। और साथ - साथ अपने बच्चो को भी सिखा रही थी। जिसमें गणित के सवाल हल करना था। उसने अपने पति से पूछा कितने होगें पति ने मजाक में गलत बता दिया इस पर सरोजनी द्वारा अपने पति को लम्बे भाषण के साथ सवाल को हल कर के दिखाया और आत्मविस्वास के साथ पति के साथ चर्चा की इस घटना के बाद पति की निगाह में सरोजनी अनपढ़ नही पढ़ी लिखी पत्नी के रूप में आदर पाने लगी और पढने की हर स्वतंत्रता पा गई।

सरोजनी आज पढना, लिखना, समझना, जोड़, घटाना, गुणा भाग, रचनात्मक क्षमता, व्यक्तिगत स्वच्छता, शिष्टाचार, अभिनय, अभिव्यक्त करने में अन्य किशोरियों के बराबरी में है। और स्वयं के साथ - साथ बच्चो को भी पढ़ाने का कार्य करती है। और अपने पति की पढी लिखी पत्नी बनकर दम्पत्य जीवन निर्वाह कर रही है।

4. थाली का घी थाली में :

परियोजना क्षेत्र मे देखा जाय तो आज भी ऐसे गॉव है जहॉ पर लोगों के आय वर्धन का कोई साधन नही है। ऐसा ही एक गॉव है श्रीनगर ग्राम पंचायत मरेली ब्लाक गोदलामउ सीतापुर में यह गॉव अनुसूचित जाति बाहुल्य गॉव है। इस ग्राम में 50-60 परिवार है जिसमे 25 से 30 परिवार काफी गरीब है और किसी तरह से मेहनत मजदूरी करके गुजर बसर करते थे। आये दिन लोगों के पास मुशीबते बनी रहती थी। कही बीमारी बच्चो की पढाई, कही खेती के लिए खाद बीज के लिए पैसा शूद कारो से लेना पड़ता था जो कि मासिक 10 प्रतिशत ब्याज देना होता तथा कुछ न कुछ घरेलू सामग्री के रूप में उनके पास गिरवी रखनी होती थी। जो पैसा लिया जाता था तथा ब्याज का पैसा दोगुने से अधिक हो जाता है। जिससे लोगो का काफी अर्थिक नुकसान होता था तथा अभिभावक एवं बच्चों से घरेलू कार्य करवाया जाता था। जिससे बच्चों के स्कूल छूट जाते या अनियमित हो जाते थे। जिससे परिवार को चिन्ता बनी रहती थी ।

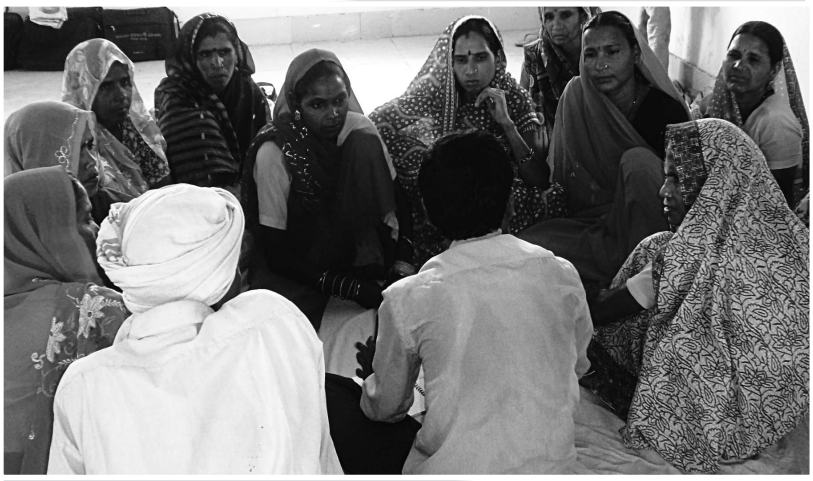

वर्ष 2011-12 में शाश्वत सहभागी संस्थान मिश्रिख के द्वारा वालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यकृम के तहद् उपरोक्त स्थितियों का आकलन करके बाल शिक्षा केन्द्र व किशोरी केन्द्र खोला गया तथा रामदास के दरवाजे पर एक सामुदायिक बैठक करके आय वर्द्धन के संदर्भ में स्वंय सहायता समूह बनाने की चर्चा की गयी जिस पर 15 महिलाये समूह बनाने पर सहमत हुई जिसमें

12 महिलायें आज भी समूह में है। और 30 रू. मासिक प्रति सदस्य जमा करती है। समूह की अध्यक्ष उशा भारती तथा कोशाध्यक्ष देवकी है। इस समूह का नाम दुर्गा स्वंय सहायता समूह रखा गया है। इस समय समूह की कुल बचत 8780 रूपये है। समूह की लेन देन प्रक्रिया काफी मजबूत है। तथा महिलायें स्वंय तथा दूसरो की अवश्यकता पर ऋण पर व्याज भी मिलता है। यह भी समूह में रहता है साहूकार के चंगुल से छुटकारा मिला अपनी मदद अपने आप करती है। उसकी कहावत है। कि थाली का घी थाली में ।

5. शीलू ने लगाई छलाग :

औरत-औरत की दुश्मन है। इसका निर्धारण करना मुस्किल काम है।यह तर्क का विषय है औरतों की शिक्षा हमारे समाज के लिये अहम मुद्दा है। बच्चो जिसमे खासकर लडकियों की प्रथम पाठशाला माता होती है। और वह भी अशिक्षित हो तो इस पर बच्चो पर क्या असर पडेगा यह सोचने का विषय है।

शीलू पुत्री शुभाष चन्द्र जो जनपद सीतापुर के ब्लाक गोदलामउ के ग्राम पंचायत करूवामउ की रहने वाली है। 12 साल की शीलू जिसकी मॉ सुभाशिनी जो अपने 2 लडके एवं 1 लडकी शीलू की शिक्षा के लिये माँ हमेशा परेशान रहती थी। उस पर पति का पूरे दिन तास खेलना हमेशा शीलू की मॉ को परेशान किये रहता था। सास-ससुर से अलग होने पर सारी जिम्मेदारी शीलू की मॉ पर आ गई। और ह्वीलू का नाम लिखा दिया गया। लेकिन प्राथमिक विद्यालयों की स्थित एवं शिक्षा की गुणवक्ता को देखते हुऐ। उनकी मॉ ने शीलू को स्कूल नही भेजा और अच्छी शिक्षा पाने के लिये माइके भेज दिया वहॉ शीलू का नाम प्राईबेट विद्यालय में करवाया गया लेकिन शीलू की मॉ इससे संतुष्ट नही हुई और वापस घर बुला लिया और अपने साथ ग्रह कार्य में मदद लेने लगी महीने में एक दो बार छात्रवृत्ति, ड्रेस, पुस्तके मिलने पर सकूल भेज दिया और शेष दिनो में ग्रहकार्य में मदद करवाती ।

शाश्वत सहभागी संस्थान जो कि एक स्वेछिक संगठन है जो गोदलामउ में शिक्षा स्वास्थ एवं पंचायती राज जैसे मुद्दों पर काम करता है। जिसमें बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम के अर्न्तगत 6 से 18 साल की लडकियों को शिक्षा एवं स्वास्थ के लिये काम करता है। जिसमें शिक्षा से टूटे हुए बच्चों एवं लडकियों को उनकी मुख्यधारा से जोडने का कार्य किया जाता है। जिनको केन्द्र के माध्यम 3 से 4 घन्टे नियमित शिक्षा कार्य के द्वारा तैयार किया जाता है। जिसमे क्षेत्रीय कार्यकर्ता मीरा द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है। जिसके अर्न्तगत नियमित सम्पर्क के दौरान बैठक में शीलू की मॉ से मुलाकत हुई जिसमे उन्होने शीलू की पढाई की चर्चा की और कहा यदि 25 से 30 रू0 लेव तब हमरिव बिटिया कइहा पढ़ाई देव। और अपनी मनोदशा की पूरी कहानी क्षेत्रीय कार्यकर्ता को सूना दी और शीलू सेन्टर पर आने लगी शुरूवात में शीलू कुछ सहमी - सहमी रहती थी। शिक्षण के प्रारम्भ में बच्चों के साथ बाल सभा जिसमें अभिनय, गीत, नाटक, खेल, आदि के माध्यम से माहौल एवं रोचकता वृद्धि के लिये पूर्ण कार्ययोजना अनुसार कार्य किया जाता है।

जिसका असर शीलू को खेलना बहुत अच्छा लगता इसके लिये 1 शैक्षणिक घन्टे के बाद 1 खेल को पाठ्य योजना में डाला गया पढ़ाई के लिये करके सीखने के ज्यादा अवसर उपलब्ध करये जाने लगे।

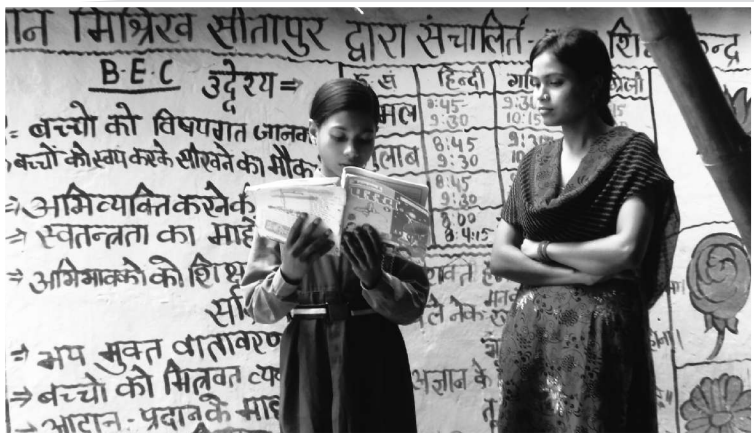

जिसका सीधा असर बच्चो खासकर शीलू पर पड़ा। वैसे शीलू कक्षा 4 पास थी परन्तु शुरूवाती दक्षता आकलन में शीलू को कक्षा 2 की छात्रा के रूप में नामांकित किया गया। अब शीलू लगातार नियमित रूप से केन्द्र में आने लगी थोडी सी देर होने पर शीलू क्षेत्रीय कार्यकर्ती के घर पहुॅच जाती और देर के लिये लड़ने लगती और हर काम में सबसे आगे आगे रहने लगी। माह में बच्चों के बीच होने वाली प्रतियोग्यता में शीलू सबसे आगे रहती। और सेन्टर में देरी पर शिक्षक को चिढ़ाने के लिये स्वय जूनियर बच्चो को काम दे देती। और शिक्षक के आने पर उन्हें चिढ़ाती शाश्वत द्वारा न्याय पंचायत स्ततर की प्रतियोग्यता जिसमें कला में शीलू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

एक बार कक्षा 4 के स्तर के टेस्ट पेपर जो दूसरे बच्चो को हल करने के लिए दिये गये थे। शीलू ने 70 प्रतिशत हल कर डाला और छः माह की समीक्षा के दौरान टेस्ट में शीलू को कक्षा 4 की छात्रा के रूप में नामांकन किया गया । और शीलू नित्य नई गतिविधियो एवं तरीको के परिणाम एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ती के सहयोग से कक्षा 4 के मानक अन्य बच्चों की तरह पूरे कर लिये और मॉ की अगुवाई में ग्रहकार्य एवं शिक्षण कार्य में सहयोग करने से शीलू की मॉ को भी संतुष्टि मिली ।

वर्तमान समय में शीलू अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में कक्षा 5 की छात्रा है। उसके माता पिता के साथ - साथ शाश्वत सहभागी संस्थान को आत्म संतुष्टि है।

6. सुदामा की कोशिश का रंग ऐसा :

''लडकी अगर एक पढ जाती दो परिवारों के भाग्य जगाती है। इसमें कितना सच है सुना होगा और हो सकता है। देखा भी हो और हो सकता है। देखकर अनदेखा भी कर दिया हो और अपने सामने खड़े क्यो को अपने अन्दर दफन कर आजाद भारत की गोद में जागरूक होने का स्वाभिमान अभिमान लिये जिन्दगी जी ली होगी मगर उनकी शिक्षा पर कितना ध्यान दिया होगा अगर ध्यान दिया है तो धन्यवाद !

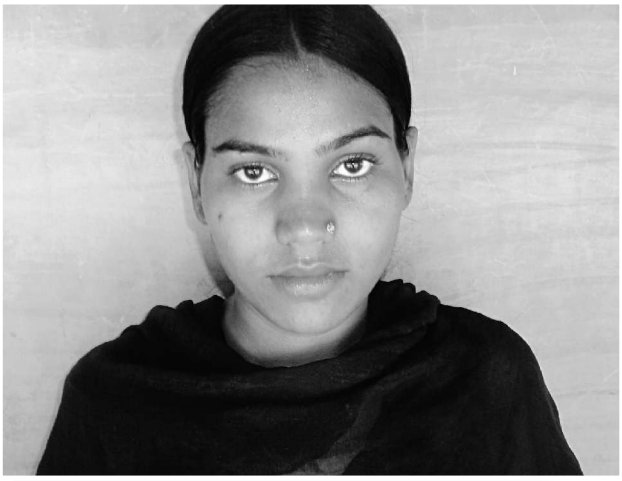

सुदामा जिसके पास आठ जमात पढे होने का गौरव तो था मगर झूठा क्योकी वास्तविकता यह थी की सुदामा की सरल अच्क्षर की पहचान भी नही थी सुदामा के पिता का नाम संकटा प्रसाद है। जो जनपद सीतापुर की ब्लाक गोदलामउ के ग्राम सभा मरेली का एक छोटा सा गॉव श्रीनगर है। जहॉ की कुल आबादी लगभग 845 है जहॉ सभी किसान है। उनकी शिक्षा का स्तर लगभग 30 प्रतिशत है। जिसमे महिलाओं का स्तर बहुत कम है। वहॉ ड्राप आउट एवं 12 अनियमित किशोरियों में से एक सुदामा भी थी। सुदामा परिशदीय विद्यालय की पढ़ी थी। मगर उसे सरल अक्षर पहचान भी नही थी।

शाश्वत सहभागी सस्थान बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम के अर्न्तगत श्री नगर में सेन्टर के माध्यम से शिक्षा एवं उपचारात्मक के अर्न्तगत स्वास्थ की शिक्षा देने के लिये गॉव की शिक्षा से वंचित किशोरियों का चयन किया सुदामा भी सम्पर्क करने पर आने लगी 18 वर्ष की उम्र होने पर अब स्थित के अनुसार पढने की ललक उम्र के साथ - बढ रही थी। और वह सेन्टर पर आने लगी शुरूवात में सुदामा को कुछ अजीब सा लगता पढाने का तरीका खेल दौडना खेलना आदि लेकिन

उम्र के साथ साथ बचपन वापस आ गया और सुदामा पढ़ने में मन लगाने लगी। और संचालक की मदद से सुदामा मात्र 2 माह में साधारण पढना लिखना आने लगा। और संस्थान के कार्यकर्ता उसका मनोबल बढाने लगे नित नये - नये तरीके खोज कर सिखाने का प्रयास करने लगे। गॉव की स्थित के अनुसार अन्य लोगो द्वारा मजाक उडाया जाना आये दिन होता रहता। फिर संस्थान और सुदामा अपने मार्ग पर आगे बढ़ते रहे और वही सुदामा के माता पिता जहॉ पहले कार्य को महत्व देते थे अब सुदामा की शिक्षा के लिये महत्व एवं सहयोग करने लगें इसके बदले में सुदामा अपनी माता को पढाने का काम करने लगी अब सुदामा की मॉ फूले नही समाती और उनको भी साधारण पढना लिखना आ गया था। सुदामा मॉ के अलावा अपने छोटे भाई बहनो को भी पढाने का काम करती उन्होने केन्द्र के लिये एवं ग्रह कार्य के अलावा मॉ और भाई बहनों के पढाने के समय का प्रबन्धन सुदामा की पढने की इच्छा हेतु तैयार था।

अब सुदामा के मॉ-बाप ने सुदामा की संगाई की बात चलाई संयोग वश सुदामा की ससुराल में सभी अशिक्षित थे। और जब उनको पता लगा कि उनकी होने वाली बहू सेन्टर के माध्यम से अध्ययनरत है। तो सभी सुदामा की पढाई के लिये उपयुक्त शिक्षण सामग्री भेजने लगे। और सारे परिवारिक सदस्य पढी लिखी बहू पर इतराने लगे। मई माह में सुदामा की सादी जिला हरदोई के एक गॉव से हो गई शादी के बाद भी सुदामा जब माइके मे होती तो केन्द्र पर पढने जरूर आती और उसकी खुशी में आत्म संतुष्टि की झलक साफ नजर आती। सादी के बाद सुदामा के ससुराल वालों ने उसका दाखिला अच्छे प्राईवेट स्कूल में करा दिया है। वर्तमान समय में सुदामा एक हाउस वाइफ होने के साथ - साथ एक विद्यार्थी भी है। सुदामा के साथ - साथ दोनो घरो के सदस्य खुश है।

7. हमें न समझो छोटा बच्चा :

कच्ची मिट्टी का घडा कोरा कागज, गोबर गनेश कहने वालो को बच्चों के प्रति अपनी भावना को बदलना होगा। बच्चे को सीख के लिए उचित महौल एवं प्यार एवं दुलार की आवश्यकता है। किसी भी बच्चे को फेल होने पर बच्चे को फेल कहना बडा गर्व भरा शब्द है। जबकि प्रशिद्ध शिक्षाविदो ने कहॉ है। " Child not fel" बच्चा फेल नही होता है। बल्कि उसको सिखाने वाला फेल होता है। फेल होता शिक्षातंत्र की बच्चा/बच्चे को उचित माहौल जिसमे प्यार हो दुलार हो और स्वतंत्रता के साथ सीख का मौका। मोहनी एक ऐसी ही लडकी का नाम है।

मोहनी पुत्री श्री राम जिसकी उम्र लगभग 7 वर्ष जनपद सीतापुर के विकास खण्ड गोदलामउ के जमुनापुर गॉव की है माता पिता के आलावा 2 भाई 4 बहन हैं जमुनापुर में सभी अनुसूचित जाति के लोग रहते है। जिसमे शिक्षा का स्तर बहुत ही दयनीय है। क्योकि 18 वर्ष तक की एक भी किशोरी हाईस्कूल पास नही है।

शाश्वत द्वारा सन् 2008-09 में जमुनापुर को बाल केन्द्र के संचालन हेतु चुना गया। जिसमे गॉव के ही 26 बच्चे नामाकित किये गये और नामांकित बच्चों के अभिभावकों के साथ प्रथम बैठक की गई जिसमे मोहनी के माता पिता ने भी भाग लिया और पता नही कौन सी बात उनको अच्छी लगी और मोहनी एवं उसके भाई को भेजना शुरू किया प्रारम्भ में मोहनी कुछ सहमी - सहमी डरी डरी बालकेन्द्र पर आती और सिर्फ कापी पर अक्षर के लिखने का अभ्यास कर लेती और बैठी रहती चर्चा/बाल सभा में कई बार पूछने पर सरल जबाब देती मगर हर सुनने वाली बात को गौर से सुनाती सेन्टर संचालक द्वारा बोलने वाले खेल करवाये जाते जिसमे सिर्फ बोलना और समझना होता और मोहनी खुलकर बोलने लगी। मोहनी के भाई उसको गतिविधि करने के बाद घर पर चिढाते फिर भी अब मोहनी पर कोई फर्क नही पडता सेन्टर पर बच्चों की स्वतंत्र सीख की पूरी स्वतंत्रता दी जाती जिससे बच्चों के अन्दर झिझक कम हुई और

खुलकर अपने आप को अभिव्यक्त करने की आदत पडी ग्रह कार्य को भी सेन्टर संचाक द्वारा प्रमुख कार्य के रूप में समझा जाता इसके साथ - साथ समय -समय पर सीनियरो द्वारा पाठ्य योजना में बदलाव किया जाने लगा और हर माह में होने वाली स्टाफ बैठक में शिक्षण कार्य में आने वाली समस्याओं को चर्चा का विषय बनाया जाता और समस्त स्टाफ सुधार हेतु सुझाव देता जिसको जहां की समस्या होती वहां का केन्द्र संचालक नोट कर दूसरे दिन अपनी पाठ्य योजना में सामिल करता अब आये दिन सीख भरे खेलों एवं शिक्षण कार्यो में मोहिनी को आनन्द आने लगा। अब एन0 नर्सरी एक में प्रथम स्थान पर आ गई मोहिनी की रूचि को देखते हुए सेन्टर संचालक अन्य बच्चों के साथ मोहिनी को साबसी देना नही भूलते इससे मोहिनी के मनोबल को दूना उत्साह मिलता। अब मोहिनी आकस्मिक अवकाश वाले दिन भी सेन्टर पर आ जाती और दो तीन घन्टे रूककर पढती ऐसी स्थिति को देखकर सेन्टर संचालक द्वारा स्थान दाता की लडकी को आकस्मिक अवकाश वाले दिन आये बच्चों को शिक्षण कार्य के लिए कह दिया कुशलता एवं फैसलीटेशन के वजह से यह कार्य किरन ने स्वीकार कर लिया और मोहनी के लिये अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था हो गई अब अभिभावकों के साथ बैठक में मोहनी का नाम सबसे तेज बच्चों में लिया जाता।

एक बार मोहनी प्रा0 वि0 उत्तरधौना जहॉ नामांकित थी वजीफे के लिये गई और वहॉ की प्रधानाध्यापिका जो सेन्टर के बारे में जानती थी। उन्होंने मोहनी को खूब डाटा और उसके साथ -साथ यह भी धमकाया कि जो बच्चा हस्ताक्षर नही कर पायेगा उसको छात्रवृति नही दी जायेगी। क्योंकि उनको पता था कि यह लड़की बहुत कम पढने आती है। और यह हस्ताक्षर बिल्कुल नही कर पायेगी। और मोहनी को डाटते हुए प्रधान के पास हस्ताक्षर के लिए भेजा पहले तो मोहनी सहम गई। बाद में पिता के इसारे पर हस्ताक्षर करने गयी और प्रधानाध्यापिका सहित प्रधान को भी आश्चर्य हुआ 7

साल की लड़की जो यहां विद्यालय में पढने भी कम आती है वह इतने स्पष्ट और सुन्दर अक्षरो में भी लिख सकती है। सभी मोहिनी का मुह ताकते रह गये। इस पर प्रधान द्वारा मोहिनी पर स्नेह से भरे हाथ फेरकर उसके बारे में पूँछा जाने लगा जिसमें परिवारिक जानकारी एवं शिक्षण कार्य भी मोहिनी को प्रेम में रहकर जवाब देने की आदत सीखी थी और वह निडर होकर सब कुछ बताती चली गयी। अब प्रधान बिना कहे रह ही नही सके कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी सीखाने के लिए उम्र नही माहौल चाहिए। और मोहिनी के साथ शाश्वत की तारीफ में कुछ शब्द कहे। ये देख मोहिनी के पिता श्री राम गदगद हो गये। और यह घटना हर गॉव वालों के अलावा सेन्टर संचालक को भी बताई। मोहिनी को अंग्रेजी कला में विशेष रूचि है। इससे मोहिनी अपने कक्षा में सबसे कम उम्र की सबसे तेज लड़की है। उसे गणित में सा0 जोड, गिनती, पहाडा के साथ-साथ सरल कहानी पढना और अग्रेजी के अक्षरों के साथ मीनिंग पढना भी आता है। और याद भी है।

8. जागे गये अभिभावक :

विकास खण्ड गोदलामाउ सीतापुर में ग्राम पंचायत चांदपुर के मजरा अहमदपुर में प्राथमिक विद्यालय है। इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक तथा एक शिक्षा मित्र अवधेश कुमार है। इस विद्यालय में कुल पंजीकृत 180 बच्चे है अध्यापक व बच्चो का मानक के अनुसार कम होने के कारण संस्थान की ओर से बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ एक कक्षा में संस्था कार्यकर्ता द्वारा गुणवक्ता परक शिक्षा हेतु पढाने का कार्य किया जा रहा है।

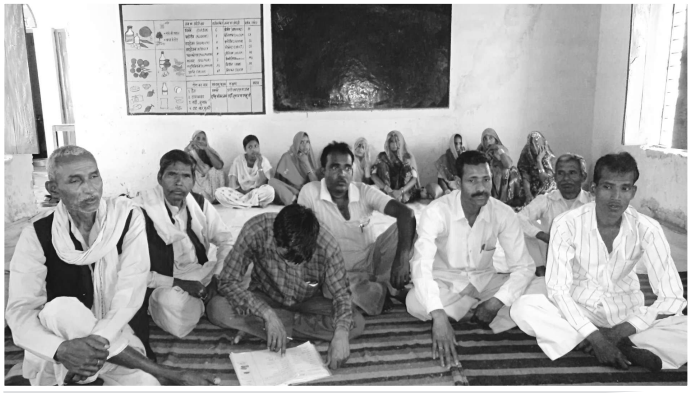

जब विद्यालय में संस्था कार्यकर्ता द्वारा एक कक्षा में पढाने का कार्य किया जा रहा था तो इसका मौका उठाते हुए प्रधानाध्यापक स्कूल में समय का पालन न करना तथा स्कूल में न पढाना यह कार्य जारी रहा। इसको देखते हुए एवं अवलोकन करने के बाद ग्राम अहमद पुर गॉव में सामुदायिक बैठक करके कार्यक्रम के बारे में शिक्षा के महत्व तथा अभिभावको के बच्चों की जिम्मेदारी के प्रति जानकारी दी गयी। उसके बाद स्कूल की स्थिति के बारे में जानकारी दी गयी। जिस समुदाय ने बताया कि अध्यापक समय से नही आते। जिस पर प्रतिकिया व्यक्त करते हुए बताया कि शिक्षण व्यवस्था मे सुधार तथा अध्यापक समय से आये तथा स्कूल में पढाये इसकी देख रेख करने की जिम्मेदारी आप की है। और इसके बाद अभिभावकों को शिक्षा विभाग के मोबाइल नम्बर दिये गये। अभिभावक मोबाइल नम्बर पाने के बाद स्कूल में अगुवाई की परिणाम स्वरूप अध्यापक देर से आने पर कहा गया इसके बाद भी न मानने पर शिक्षा से सम्बन्धित अधिकारियों को फोन किया गया जिसपर वह संस्था कार्यकर्ता पर नाराज हुए बाद में समय का पालन व बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करने लगे है। और एक आदर्श विद्यालय के रूप में देखने को मिलेगा ।

9. पाठशाला - खुल गया ताला :

समय परिस्थित के अनुकूल स्यमं के लाभ का त्याग करना जो समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति करता हो ये कार्य वही कर सकता है। जिसके अन्दर कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तथा समाज सेवा की भावना कूट कूट कर भरी हो आश्चर्य तो तब होता है। जब यह पता चलता है। कि इस प्रकार का किरदार निभाने वाला कोई बहुत बडा नेत्री नही बल्कि एक साधारण पुरूष मिश्रीलाल है। जनपद सीतापुर के विकास खण्ड गोदलामउ के ग्राम सभा दहेलरा का एक छोटा सा मजरा विराहिमपुर है जो नीमसार गोदलामउ सम्पर्क मार्ग से 1 किमी दक्षिण स्थित है। इस गॉव की कुल आबादी लगभग 950 है। जिसमें स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या 250 है। जिसमें अनुसूचित जाति एवं पिछडा वर्ग के लोग निवास करते है।

बिराहिमपुर गॉव के पडोस 1 किमी0 के अर्न्तगत कोई विद्यालय नही था। इसपर गॉव वालों ने मिलकर योजना बद्ध तरीके से माग की और पैरवी में सभी लोगों ने अपनी भूमिका निभायी और स्कूल का निर्माण होगया। जुलाई 2011 के सत्र में वहॉ कुल 192 बच्चे नामांकित है। जिसमें शिक्षण कार्य दो महिला शिक्षा मित्र तैनात है जो उच्च बिरादरी से ताल्लुक रखती है। सत्र 2011-12 में शाश्वत सहभागी संस्थान जो एक स्वेक्षिक संगठन है। जो शिक्षा स्वस्थ एवं पंचायती राज आदि मुद्दो पर काम करती है। जो गोदलामउ के 25 ग्राम पंचायतों के 146 गॉव बालिका शिक्षा के अर्न्तगत कार्य कर रही है। शिक्षा अधिकार अधिनियम लागू होने पर स्कूलों में एक स्कूल प्रबन्ध समिति का गठन हुआ जो स्कूल की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु सहयोग/देखभाल का काम करेगी। उसी के तहत शाश्वत सहभागी संस्थान के द्वारा अभिभावको को जागरूक करना व स्कूल प्रबन्ध समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण करना सामाजिक कार्य करना तय हुआ शाश्वत के क्षेत्रीय कार्यकर्ता द्वारा गॉव के स्कूल का सम्पर्क किया गया जिसमे जो स्थिति नजर आयी उससे शिक्षा अधिकार अधिनियम एवं सरकारी तन्त्र के दावे की असली सूरत नजर आती है। वहॉ जाकर पता चला कि यहॉ का स्कूल लगभग 1 माह के उपर से बन्द है। शिक्षा अधिकार अधिनियम लागू होने के 2 साल बाद भी यह स्थिति है । क्षेत्रीय कार्यकर्ता द्वारा यह सूचना अपने सीनियर स्टाफ को दी गयी। इस्तफाक से एस0एम0सी0 प्रशिक्षण में सामिल होने वाले विद्यालयों में से बिराहिमपुर का स्कूल भी एक था । उसके सदस्यो तक प्रशिक्षण की सूचना देने के लिए जब सम्पर्क हुआ तबभी

वह स्कूल बन्द था इस पर वह स्थिति महिलाओं एव बच्चो से शाश्वत स्टाफ में बात की और उस चर्चा की बीडियो रिकार्डिग भी की जिसमें महिलाओं से बात करने पर उन्होने एक माह से उपर विद्यालय बन्द बताया जिस पर शाश्वत कार्यकर्ता द्वारा शिक्षा अधिकार अभिभावकों की बच्चों के प्रति जबाबदेही पर चर्चा की इस पर महिलाओं द्वारा बताया गया ''कौनु दादा से बोलय जूता खायक है। का हम लोग का करी हम का तौ हिअय रहयक है।'' इसके बाद संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा उपस्थित 10-12 बच्चों से बात की बच्चो का मासूमियत भरा जबाब था हम का करी जब इस्कूलय नाई खुलति है। कौनव कौनव दिन खुलति है। तब दीदी भगाय देती है।'' कहती है खयालव जाय एम0डी0एम0 की बात पूछने पर कहां कि कौनव कौनव दिन तहरी बनति है। पढाई के लिए कहने पर बच्चो द्वारा डाटने की बात कही गई। अब बच्चों के हक के लिए कौन अगुवाई करे इस सवाल ने जन्म ले लिया ।

शाश्वत कार्यकर्ता द्वारा अगला चरण अभिभावकों के साथ बैठक करना तय किया गया और उसमे स्कूल की समस्या पर एवं शिक्षा अधिकार अधिनियम पर चर्चा हुई जिसमें अभिभावको द्वारा साफ अगुवाई करने के लिये इन्कार किया और उनका जवाब था। ''कौन बोलय गोली खाय। आज कुछ नहि कहिहय लाठी लेहै मोहरेप खडे हुईहय'' इस पर संस्थान कार्यकर्ताओं द्वारा शिक्षा अधिकार विस्त्रत चर्चा की और अभिभावकों को हर तरह से समझाया गया तब कही जाकर एक चिनगारी मिश्रीलाल नजर आये ।

मिश्रीलाल को मनोवैज्ञानिक तरीके से जगाया और साहस बधाया गया। अब मिश्रीलाल के तेवर बदल गये थे। अब वह बच्चो के लिए अकेले लडने के लिए तैयार थे उसके बाद शाश्वत कार्यकर्ताओं द्वारा बिराहिमपुर के सदस्यों के साथ मिश्रीलाल से लगातार सम्पर्क बनाकर

एस0एम0सी0 प्रशिक्षण में आने के लिए तैयार कर लिया और एस0एम0सी0 प्रशिक्षण में आने पर मिश्रीलाल और अभिभावको को आत्म विश्वास सिर चढकर बोलने लगा। और वह लगातार पशिक्षणों में आये।

एक दिन मिश्रीलाल ने गांव के कई अभिभावकों को इकट्ठा किया और स्कूल की स्थिति पर स्वयं चर्चा की इस पर अगुवायी करने की बात पर स्वयं अपने आप को कहा जिसपर सभी लोगों द्वारा निर्णय होने पर यह तय हुआ कि जिला बेशिक शिक्षा अधिकारी को सूचना दो जाये। और वही सभा में शाश्वत प्लान के मुताबिक फोन से बात की गई जिस पर जिला बेशिक शिक्षा अधिकारी द्वारा खण्ड शिक्षा अधिकारी को जॉच का आदेश दिया और खण्ड शिक्षा अधिकारी न वही रूके रहने का आश्वाशन दिया मिश्रीलाल एवं अन्य अभिभावक 4 बजे तक मौके पर रूके रहे लम्बे इन्तजार के बाद कोई नही आया तो कुछ अभिभावक चले गये लेकिन मिश्रीलाल व अन्य सदस्य रूके रहे। अवश्य 5 बजे खण्ड शिक्षा अधिकारी की गाड़ी मौके पर आई और सभी से पुष्टि करने के बाद उपयुक्त लिखा पढी कर अश्वाशन देकर बिदा हो गये। दूसरे दिन शिक्षा मित्र के पिता जो शिक्षा विभाग में बडे वोहदे पर थे आ धमके और गॉव वालों को गालियां बकते हुए कहा अब देखते कौन खुलवायेगा स्कूल और वहां स्थित राजिस्टरों को उठाकर धमकी देते हुए चले गये अब मिश्रीलाल द्वारा वेचैन होकर शाश्वत को सूचना दी इस पर संस्थान कार्यकर्ताओं द्वारा ब्लाक स्तरीय कार्यशाला में अपनी बात उठाने एवं शान्ति रहने के लिये कहा और मिश्रीलाल ने वैसा ही किया और फोन एवं बैठकों में जमकर अगुवाई की और एक दिन स्कूल का ताला खुल गया और पढाई होने लगी शुरूवात में कुछ स्थित अध्यपको द्वारा गुस्सा भरी रही बाद में स्थित सामान्य हो गई और गॉव वालों को राहत मिली है वर्तमान समय तक स्कूल नियमित खुलता है। और बच्चो की पढाई सही हो रही है। आशा है आगे भी होगी।

10. जीवन की नई राह पर :

वर्तमान परिवेश में स्वास्थ एवं शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है। इस तथ्य से कोई अनभिग नही है। बिना शिक्षित समाज की परिकल्पना आज के युग में नही की जा सकती है। आज आज 65 साल बाद भी सरकार स्वास्थ एवं शिक्षा को वह स्थिति प्रदान नही कर पायी है जो आवश्यक थी। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों की 70 प्रतिशत बच्चे / किशोरिया शिक्षा एवं जानकारी के अभाव में अपना जीवन बर्बाद कर रहे है। यह देन उनके परिवेश की है। जिससे कोई अलग नही कर सकता ।

किशोरियां जिनकी उम्र 18 वर्ष हो उनका मादक प्रदार्थ का सेवन करना सारा-सारा दिन जगलो में जानवरो को चराना एवं कुकृत्यों को करना। जनपद सीतापुर के अदौलीपुर दलित किशोरियों की दैविक दिनचर्या में शामिल था या लोभ द्वारा लडकियों को जंगल से लकडी चुनना जानवर चराने जैसे कार्य करवाये जाते है। ऐसी किशोरियां स्कूल के कार्य से अनभिग है। और मां बाप उनके सोहबत से अनभिग होकर मॉ बाप बनने का दावा करते है।

स्वेछिक संगठन शाश्वत सहभागी संस्थान जो गोदलामउ की 25 ग्राम पंचायतों में बालिका शिक्षा एवं व्यक्तिगत स्वच्छता का कार्य कर रही है। अदौलीपुरवा की किशोरियों को सही सोहबत में लाने की कोशिश की जिसमें सबसे पहले एसी किशोरियों को चिन्हीं करण किया गया जिसमें 22 किशोरियां है। जिनका नामांकन किशोरी केन्द्र के माध्यम से किया गया किशोरियों के पुरवा के अभिभावकों से किशोरियों के कार्य एवं शिक्षा के महत्व पर बात करने पर उम्र और कार्य/गरीबी का दुखडा सुनाकर छोड़ दिया गया इस बार अगले चरण में किशोरियों के माता अभिभावको से बात की गई जिसमें स्वयं उनकी अशिक्षित जिन्दगी का उदाहरण दिया गया तब कही जाकर थोडे समय भेजने की स्वीकृत प्रदान हुई। प्रारम्भ में 6 या 7 किशोरियां सेन्टर पर आई और अपनी सोहबत के रंग को विखेरने लगी जिसमें गन्दी गाली आम भाषा के रूप में थी। उस पर भी हम उम्र का शिक्षक होना और मदद करता था। सेन्टर संचालक महिला कार्यकर्ती द्वारा प्रारम्भ में शिक्षण कार्य सीखने के स्थान पर सिर्फ औपचारिक रूप से प्रतिदिन 9 से 1 तक बजकर 30 मिनट के घन्टे में सिर्फ बात किया जाने लगा। और उनकी हरकतों के प्रति सहानुभूति के साथ समझाया जाने लगा। आये दिन लडकिया आपस में झगडा कर देती और यह बात उनके अभिभावको तक पहुॅचाने के बाद दूसरे दिन किशोरियों की संख्या कम हो जाती । इसके लिए सेन्टर संचालक द्वारा

नियमित रूप से सम्पर्क बैठक की जाने लगी और लडकियों को अन्य शैक्षिक कार्यक्रम में शीख हेतु सामिल किया जाने लगा जिससे किशोरियों के स्वभाव में परिवर्तन हुआ और वह सेन्टर की ओर आकृर्षित होने लगी। शाश्वत रणनीति के अनुसार उनको सीखने एवं सिखाने का कार्य किया जाने लगा और उनके गलत आदतों को किसी का उदाहरण देकर समझाया जाने लगा जिससे किशोरियों में काफी बदलाव आया और किशोरियां महिला सेन्टर संचालक के साथ दोस्त जैसा व्यवहार करने लगी और पढाई में मन लगाने लगी।

शाश्वत पाठ्य योजना के अनुसार रोज नये तरीके से पाठ्य योजना तैयार कर उनको गतिविधि आधारित तरीकों से पढाने का कार्य एवं नियमित 45 मिनट तक सभा करना जिसमें उनसे एवं उनकी सीख और अनुभव से जुडे मद्दो पर चर्चा करना एवं समूह वार करके सीखने का मौका दिया जाने लगा। इसके अलावा सप्ताह में एक बार उनके साथ व्यक्तिगत साफ सफाई पर चर्चा की जाने लगी जिसमें प्रारम्भ में लडकियों द्वारा आपत्ति जताई लेकिन बाद में किसी को समस्या होने पर सलाह एवं चर्चा में आई बातों का पालन करने से लाभ होने पर महिला कार्यकर्ता के साथ खुलकर बात करने लगी और बताई गई सावधानियों को अपनाने लगी अब वह नियमित सेन्टर पर आती है। और जिसमें कुछ ड्राप आउट किशोरियां सा0 पढना लिखना एवं गुणा भाग, जोड घटाना बात करना एवं सन्दर्भ को समझ कर जवाब देने लगी है। और उनके अभिभावकों के साथ साप्ताहिक या समयानुसार प्रतिदिन सम्पर्क किया जाता है। और अभिभावकों को शिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करवाया जाता है। अब वहॉ किशोरिया अपनी गलत आदतों को छोड़ चुकी है। और बढने के सपने देख रही है। आशा है लडकियों का भविष्य सुधरेगा।

11. किशोरी केन्द्र बना परिवर्तन का घर :

शिक्षा ही ऐसी धरोहर है जिसको कोई बॉट नही सकता और यह इन्सान की जिन्दगी में कब और किस रूप में अपनी भूमिका निभायेगी यह परिस्थित पर निर्भर करती है। यही सच और मार्ग दर्शन कर सकती है।

रंजना एक अति गरीब परिवार में पलने वाली लड़की है। पिता अशिक्षित है रंजना के अलावा परिवार में 3 बडी बहने और एक भाई है। रंजना सबसे छोटी है। रंजना का गॉव असरफनगर जो जनपद सीतापुर के ब्लाक गोदलामउ के सबसे पिछडे गांवों में आता है। यहॉ पर मूल रूप से क्षत्रीय एवं अनुसूचित जाति के लोग निवास करते यहॉ के लोगों की जीविका चलाने का एक मात्र साधन कृषि और मजदूरी है। यह गॉव शिक्षा में पिछडे गॉव में एक है। यहां 1 किमी0 से ऊपर की दूरी पर प्रा0 एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित है। गांव के अधिकतर लोग दूसरो के खेतो में मजदूरी करके जीवन यापन करते है। शाश्वत सहभागी संस्थान जो बालिकाओं के हितों को लेकर काम करता है। जिसकी क्षेत्रीय अनुदेशिका अफसर जहां अब केन्द्र संचालन जिसमें 12 से 18 वर्ष की किशोरियों को जीवन स्वास्थ शिक्षा हेतु केन्द्र पर आने वाली किशोरियों से नियमित सम्पर्क में रंजना के बारे में जानकारी मिली कि रंजना जिसकी सादी सन् 2008-09 में हो चुकी थी जो स्वयं से संतुष्ट नही थी। और कलह आत्महत्या का रूप धारण करने वाली स्थित तक पहुॅच चुकी थी। सारे रिस्तेदार घरवालो के समझाने पर अब रंजना चुप चुप रहना और किसी से लाख कहने पर भी कुछ नही बोलती थी सभी उसकी इस स्थित से परेशान थे इसी बीच रंजना शाश्वत के सम्पर्क में आई और

सेन्टर अनुदेशिका द्वारा कोशिश करने पर रंजना सेन्टर तक आई और अनुदेशक द्वारा रंजना के मॉ बाप दोस्तों से रंजना के बारे में पूरी जानकारी ली और दूसरी लडकियों की तरह रंजना को भी केन्द्र पर आने के लिये नियमित सम्पर्क किया जाने लगा।

और धीरे - धीरे कोमा में मरीज की स्थित की तरह मनोबैज्ञानिक माहौल के साथ लडना व झगडने के द्वारा धीरे धीरे वापस आने लगी और वह अब कुछ न बोलने वाली रंजना धीरे धीरे अनुदेशक की कोशिश से घुल मिल गयी इस मौके का फायदा उठाकर अनुदेशक द्वारा रंजना द्वारा चुप्पी के राज पर मलहम युक्त चोट की और रंजना अनुदेशक के सामने खुलती चली गयी और जो जानकारी मिली उससे यह स्पष्ट होता था कि रंजना जीवन कौशल की शिक्षा एवं गलत फहमी एवं अशिक्षा का शिकार लडकी है। और अनुदेशक द्वारा शिक्षण के साथ रंजना के साथ उसके जीवन से जुडी शिक्षा पर ज्यादा से ज्यादा चर्चा की जाने लगी। और उधर रंजना मानसिक रूप से स्वस्थ होने के साथ सा0 पढना लिखना और समझना, बोलना भी शीख लिया था। रंजना जो हसना बिल्कुल भूल गई थी। अब बोलने एवं हसने में सबसे आगे गिनी जाने लगी थी। और अनुदेशक के अलावा परिवार रिस्तेदारो से फिर से पूर्व की तरह मिलना बोलना चालू हो गया था। और सारे परिवार के सदस्य रंजना के बदले स्वभाव के लिये शाश्वत को दिल से धन्यवाद दे रहे थे। इसी बीच 2-3 तीन साल चली आ रही ससुराल से लडाई अब स्वयं रंजना द्वारा खत्म हो गई थी। और अनुदेशक के अनुसार धीरे धीरे रंजना के ससुराल वाले जिसमें पति से बात चीत होने लगी। और एक दिन ससुराल जाने के नाम पर आत्म हत्या की धमकी देने वाली रंजना देवी जुबान एवं मौन स्वीकृति को खत्म स्वयं की बात कही और पति के साथ स्वयं की मर्जी से ससुराल चली गयी अब रंजना पढना लिखना सवाल सोचना समझने के साथ-साथ एक अच्छी पत्नी भी है। दोनो घरो के सदस्य रंजना के दम्पति जीवन के सुखमय होने से खुश थे।

12: रामदेवी कर सकी पहल :

किशोरियां अगर अगुवाई करे तो समाज में व्याप्त दहेज प्रथा व कम उम्र में शादी करना जैसी कुप्रथाओं को जड से उखाड कर फेक सकती है। ऐसा ही एक किशोरी रामदेवी ने कर दिखाया। रामदेवी पुत्री तौलेराम उम्र 16,17 जाति चमार की है। यह ग्राम पंचायत कोरौना के मजरा वनगढ विकास खण्ड गोदलामउ जनपद सीतापुर की निवासी है। वनगढ गॉव में कुल 20,25 परिवार गुजर बसर करते है। यहॉ के लोगो का मुख्य धन्धा कृषि तथा मजदूरी है। गांव में प्राथमिक स्कूल है। प्राइमरी शिक्षा पूरी करने के बाद अभिभावक शिक्षा के महत्व को न समझते हुए घरेलू कार्य करवाते है। लोक लाज के चलते गांव में अगली कक्षा का वि0 न होने के कारण बाहर नही जाने देते।

वर्ष 2011-12 में गांव की स्थितियों का आंकलन करते हुए संस्थान की ओर से गांव सर्वे किया गया जिसके अर्न्तगत ड्राप आउट, आउटआफ आया स्कूल व अनियमित 19 किशोरियां निकली कार्य कर्ताओं द्वारा गांव में बैठक करके शिक्षा के महत्व, कार्यक्रम तथा किशोरी केन्द्र चलाने के संदर्भ में जानकारी दी गयी फलस्वरूप रामभरोसे ने जगह दी और अगस्त 011 से किशोरी केन्द्र का संचालन किया गया। इस किशोरी केन्द्र पर गुणवत्ता परक शिक्षा टी0एल0एम0 खेल विधि से दी जा रही है। शिक्षा के अतिरिक्त किशोरी स्वास्थ्य व्यक्तिगत स्वच्छता व्यवहारिक जानकारी सामाजिक जानकारी शादी की उम्र व अन्य बहुत से जानकारी दी गयी जिसके चलते रामदेवी नियमित केन्द्र पर आकर सीखती है।

इसी बीच रामदेवी के पिता ने कम उम्र में शादी तय कर दी वर पक्ष द्वारा रामदेवी की गोद भराई में 50 हजार रूपये शादी में मांगे। रामदेवी के कम उम्र में शादी करने की गुस्सा थी। ऊपर से शादी में रूपये मांगे जाने की बात

रामदेवी ने सुना। यह बात उसे अच्छी नही लगी और अपनी मां से कहा कि क्या विवाह में दहेज आवश्यक है और कहा मां आप परेशान न हो मै दहेज लोभियों के साथ शादी नही करूॅगी और दूसरे मेरी उम्र 18 से कम है। इस तरह रामदेवी ने प्रण किया कि मै पहले पढूंगी सर्व प्रथम अपनी शिक्षा पूरी करूंगी और अपने पॉव पर खडी होउंगी उसके बाद मै विना दहेज के सादी अच्छे परिवार से करूंगी इस तरह रामदेवी के संकल्प को अन्य किशोरियों ने, अभिभावक माता पिता ने समझा और शिक्षा को अमूल्य धन देने पर बल दिया।

रामदेवी की जुवानी :

हम रोजु सेन्टर पर पढइ आइति हन। दीदी जी हमकर बहुत तना केरी जानकारी दी निनिन्ह। हमारी पढाई आबही पूरी नाइ भाई है। हम बी0ए0 तक पढिकै जब नौकरी करइ लगिवा तब विना दहेजा वाला वियाहु होई अम्मा अवहि हमारी शादी न करौ अवही हमका पढइ लिखई देउ।

13: सरस्वती बनी नाम का पर्याय :

शिक्षा जैसे हक के लिये रोना हमारे समाज में कोई आश्चर्य की बात नही जहॉ वर्तमान युग आसमान को छुने की कल्पना/कोशिश कर रहा है। वही सरस्वती जैसी लडकियों के पढने के लिये दूसरो से रोना पडता है।

शिक्षा व्यवस्था को हर तरह से सहयोग एवं बढावा मिलने के बावजूद देहात की 50 से 60 प्रतिशत किशोरियां मानक शिक्षा से वंचित रह जाती और अपने दिल में तमन्नाये लिये हुए माइके से पीहर को चली जाती है।

सरस्वती एक ऐसी ही लड़की है जिसकी उम्र 16 या 17 साल है। जिसका एक छोटा परिवार है। मां पिता के अलावा एक भाई रामू है। मां एवं भाई अकसर बीमार रहते है। पिता का सहयोग एवं ग्रह कार्य अधिक होने की वजह से सरस्वती कक्षा 2 पढकर बैठ गयी लेकिन पढने की तमन्ना उसको अकसर नीद से जगा देती थी। और वह सिर्फ सपना रह जाता था इसी बीच शाश्वत सहभागी संस्थान जो बालिका शिक्षा कार्यक्रम के अर्न्तगत किशोरी केन्द्र के माध्यम से पढाने एवं उच्च शिक्षा से जोडने का कार्य कर रही है। उसका केन्द्र मेहदिया चुना गया। जहां महिला कार्यकर्ती द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है। शुरू किया गया जिसमें महिला कार्यकर्ती द्वारा अन्य 16 लडकियों के साथ सरस्वती के घर पर भी सम्पर्क किया गया। जिसमें सरस्वती की स्थित एवं परिवारिक स्थित एवं पढाई न कर पाने की दुहाई सरस्वती के घरवालों ने दी इस पर कम से कम समय देने की बात संस्था कार्यकर्ती द्वारा कही गई।

सेन्टर पर किशोरिया आने लगी जिनके साथ घुलने मिलने के अर्न्तगत संस्थान की रणनीति

के अनुसार लडकियों की स्थित रूचि, कार्य एवं सपनो और आगे की सोच को लेकर 45 मिनट का समय रखा जाता है। जिसको सभा कहा जाता है। जो शिक्षण कार्य के पाठ्य योजना के अनुसार प्रारम्भ में किया जाता है। जिसमें चर्चा के दौरान सरस्वती से उसकी इच्छा सोच एवं स्थित की बारे में पूछा गया। जिसपर सरस्वती जबाब के साथ फफक कर रोपडी और संस्थान कार्यकर्ती से सारी स्थित खुलकर बता दी इस पर संस्थान कार्यकर्ती द्वारा उसके घर पर लगातार सम्पर्क करना शुरू किया सरस्वती धीरे धीरे सेन्टर पर आने लगी प्रारम्भ में सरस्वती सहमी सहमी थी कुछ पूछने पर बड़ी दर्द भरी आवाज में जवाब देती थी। इस पर कार्यकर्ताओ द्वारा उसको बोलने के लिए ज्यादा मौके देना शुरू किया और सरस्वती खुलती चली गयी एक दिन नियमित स्कूल आने की बात कर सरस्वती द्वारा कम से कम 1 घंटा जरूर आने की प्रतिज्ञा की गई और परिवार के सदस्यों को शाश्वत कार्यकर्ती के साथ वह स्वयं पढने की स्वतंत्रता के लिये तैयार करने लगी।

सरस्वती के दैनिक कार्य पूर्ण होने एवं शिक्षण कार्य करने के तरीको से आपके माता पिता भी सहयोग करने लगे । इधर सीख हेतु संस्थान की ओर से नये नये तरीके जिसमें खेल खेल में पढ़ाना अनुमान लगाना चर्चा करना एवं गतिविधि में पढाना सहायक सामग्री से पढाना शुरू किया और सरस्वती को पढने में मजा आने लगा अब सरस्वती नियमित 100 प्रतिशत उपस्थिति होने लगी उपस्थिती भले ही एक घंटा की हो लेकिन जाड़ा गरमी, बरसात सभी को पडाई के खातिर सरस्वती को झेलना मंजूर था। जिसमें कापी किताबें पेन्सिल रबर की सहायता संस्थान द्वारा पूरी कर दी जाती है।

नियमित स्कूल आने एवं संस्थन कार्यकर्ती के साथ मिलकर परिवारिक स्थितियों को झेलते हुए सरस्वती 6 से 7 माह में तीन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया और गणित में साधारण जोण घटाना, गुणा भाग सोचने समझने एवं अभिव्यक्त करने में सरस्वती पूर्ण समर्थ है। इसके अलावा संस्थान के कार्यकर्ती के साथ मिलकर कढाई सिलाई झालर बनाना भी आने लगा है। सरस्वती अब रोने की जगह हसती है। और बहुत खुश है।

14: चौसठ साल बाद टूटा रिकार्ड :

किसी भी समाज के सर्वोमुखी विकास के लिये आवश्यक है। लडकियों को आगे आना। स्वतंत्रता के बाद महिला विकास के लिये समय-समय पर अलग-अलग प्रयास किये गये किन्तु आज के बदलते स्वरूप को यदि देखे तो गोपौली गांव कहॉ है। इस पर एक नजर डालते है।

ग्राम गोपौली जिला सीतापुर की विकास खण्ड गोदलामउ के ग्राम सभा करूवामउ का एक गॉव है। जहॉ लगभग 60 प्रतिशत मुस्लिम समुदाय के लोग निवास करते है। यहॉ कुल आबादी लगभग 1500 है। यहॉ का मुख्य व्यवसाय कृषि मजदूरी का काम होता है। जो प्रमुख रूप से जर्री का काम महिलाये एवं लड़किया प्रमुख रूप से जुड़ी है। इनके कार्य से लगभग सभी परिवारों की रोजी रोटी चलती है। इस स्थित के अलावा मुस्लिम समाज में हिन्दी के प्रति अरूचि की स्थिति है।

इस गांव का इतिहास है। कि स्वतंत्रता के बाद अब तक इस गांव की एक भी लडकी हाईस्कूल नही पास कर सकी है और यह गोदलामउ के सबसे पिछडे गांवों में एक है। यहॉ शाश्वत सर्वे के अनुसार 13 बालक एवं 39 लडकिया ड्रापआउट थी।

शाश्वत सहभागी संस्थान द्वारा बालिका शिक्षा कार्यक्रम की शुरवात सन् 2008 से गोदलामउ की 25 ग्राम पंचायतों में शुरू की गयी जिसमे सर्वे प्रथम गांव की वास्तविक जानकारी ली गई जिसमें ज्यादातर लडकिया निकली इसी क्रम में शाश्वत कार्यकर्ता सत्य प्रकाश, मीरा द्वारा अभिभावको से सम्पर्क किया इस पर अभिभावकों द्वारा साफ इनकार किया गया एवं शिक्षा को एवं रोजी रोटी में कार्य को प्रमुखता दी गई और सेन्टर पर भेजने से इन्कार किया गया। जिसमें कार्यकर्ताओं द्वारा हर तरह का प्रयास करना शुरू किया जिसमें दबाव डालना , मोहित करना , लुभाना राखी बधवाना पहिला कार्यकर्ती जो उसी गांव की होना जिसको सेन्टर पर पढाने के समय सेन्टर पर उपस्थित रहना और अभिभावकों से लगातार सम्पर्क करना आदि प्रयास किये तब अन्य लडकियों के साथ साथ ममता पुत्री सुरेश सोमवती पुत्री सुरेश हसीनजहां पुत्री साहिदअली, नसीमबानों पुत्री साहिद अली एवं जिसको शिक्षा के दौरान अनेक समस्या कार्य की अधिकता उम्र की वजह गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य पर नव युवकों का आना जाना, रूणिवादित आदि जैसी समस्यों का सामना करते हुऐ सेन्टर संचालक द्वारा समझाने का हर तरह का प्रयास जारी रखा जिसमें अतिरिक्त समय लेना भी प्रमुख था। जहॉ लडकियां कार्यवश समय न देने की समस्या थी। वही अब अतिरिक्त समय के लिये लडकियों की स्वीकृति हुई।

लडकियों की लगन एवं अभिभावको के सहयोग के साथ शाश्वत कार्यकर्ता की मेहनत का नतीजा यह निकला कि 1 वर्ष के शिक्षण कार्य के अनुसार सरकारी वि0 के कक्षा 8 की क्षमता रखती थी। इसी को देखते हुए शाश्वत कार्यकर्ता द्वारा कक्षा 8 की परिक्षा में शामिल करवाया गया जिसमे सभी लडकिया अच्छे अंकों से पास हुई और आगे पढने के लिए शाश्वत कार्यकताओं पर लडकियों द्वारा दबाव बनाया जाने लगा इस शाश्वत कार्यकर्ता द्वारा उनके अभिभावको से आगे की शिक्षा हेतु दबाव डाला गया और औपचारिक जिम्मेदारी ली गई जिसमें स्कूल सम्पर्क पैरवी आना जाना, लडकियों को ले जाना, फीस व्यवस्था करवाना आदि मदद की और दूसरे साल कक्षा 9 की परीक्षा भी सेन्टर एवं स्कूल में शिक्षण के दौरान अच्छे अंको से पास करली और उनके सपनों में जान पड गयी। और उनकी उमंगें आसमान छूने लगी और सहयोग के साथ हाईस्कूल में दाखिला करवा लिया। इसके लिये लडकियों द्वारा स्वयं धन अर्जन कर लगाने का कार्य किया जिसमें शाश्वत कार्यकर्ता द्वारा हमेशा मदद एवं सहयोग रखना जारी रखा और हाईस्कूल की परीक्षा दी और लोगों द्वारा उनकी हसी उडाई गई की हाइस्कूल पास करना इन लोगों की बस की बात नही है। लेकिन हाईस्कूल के परिणाम घोषित होने पर समके पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई क्योकि सारी लडकियां 55 से 60 प्रतिशत अंको के साथ पास कर स्वतन्त्रता के 64 साल का रिकार्ड तोड़ दिया और लोगों को तारीफ करने के लिये मजबूर कर दिया आज सारी लडकिया सत्र 2012-13 में इन्टर की छात्रा होंगी और अपने सपने साकार कर सकेगी।

15: कोशिश से बदली तस्वीर :

जहॉ पेट की भूख इन्सान को हर समय पेट भरने के तरीके सोचने पर मजबूर कर देती है। और साधारण सोच का मानुष्य बस इसी में फसकर सब कुछ भूल जाता है। भले ही वह अनेक नौनिहालों का भविष्य ही क्यो न हो जिसके सहारे हर मां बाप हजारों सपने लेकर भूखे पेट सोकर अपनी जिन्दगी और बच्चों को पालता है। उसकी जिन्दगी की हर सुबह पेट की सोच में होती है। और शाम को पेट भरने की संतुष्टि में सो जाती है।

ऐसा ही एक गांव है असरफनगर जो जनपद सीतापुर के विकास खण्ड गोदलामउ में पडता है। यह स्थान पवित्र तीर्थ स्थल नैमिषारण्य के पूर्व लगभग 9 किमी0 की दूरी पर स्थित है। गांव में अनुसूचित जाति पिछडी जाति एवं सामान्य वर्ग के लगभग 70 परिवार निवास करते है। यहां से लगभग 1 किमी0 से डेढ किमी0 की दूरी पर वि0 स्थित है।

शाश्वत संस्थान के कार्यकर्ताओं द्वारा स्थित के अनुसार 2010 में इस गांव को बाल केन्द्र एवं किशोरी केन्द्र संचालन के लिये चुना गया और सबसे पहले स्कूल न जाने वाले बच्चों को चिन्हित किया गया जिसमें 42 बच्चों एव 24 किशोरियां का नामांकन किया गया अधिकतर अभिभावक अशिक्षित होने के कारण प्रारम्भ में बच्चों को केन्द्र तक लाने मे काफी मसक्कत करनी पडी बच्चे बुलाने पर बचकर भाग जाते और अभिभावकों से सम्पर्क करने पर एक ही जबाब होता ''हम का करी जब कोई जाति नाई है।'' लगातार सम्पर्क करने के बाद 10 बच्चेां को सेन्टर तक लाने में सफलता मिली उन्ही को केन्द्र बनाकर प्रारम्भ में बालसभा जिसमें खेल, चुटकले, गीत कहानी आदि को पाठय योजना में प्रमुख रूप से एवं अनिवार्य रूप से बपनाया गया और नतीजा यह निकला अन्य बच्चे दूर खड़े होकर देखते और छुट्टी होने पर बच्चों से पूॅछते '' का करति रहव मारे तौ नाई जाति हौ '' इस पर

बच्चों द्वारा खुशी एवं स्वाभिमान से भरा एक जवाब होता ''औरू का तुम्हारी तना'' खुब खेलु खेलित हन दीदी कुछ नाई कहती है। अब अन्य बच्चों की लालसा केन्द्र आने की होने लगी अब मुह छिपाकर भागने वाले बच्चे सामने कैसे आये खैर साहरा बटोरकर बच्चे सेन्टर के नजदीक आकर पूँछा दीदी कल्हि से मिहू पढय आई '' टीचर द्वारा मुस्करा कर हां की सहमति दी। और उपस्थिति में काफी इजाफा हुआ अब बच्चों की संख्या 95 प्रतिशत तक पहुची और बच्चे खेल खेल में पढने लगे। अध्यापक द्वारा रोज नये नये तरीके सोचकर शिक्षिण कार्य किया जाने लगा।

अब स्वच्छता के बारे में सोचा गया क्योंकि बच्चे अपनी परम्परा के अनुसार धूल भरे एवं गन्दे कपडे पहनकर आते और कहने पर मां बाप पर टाल देते अभिभावकों के साथ बैठक करने पर समय न होने का बहाना बताया जाता । इस पर संस्थान कार्यकर्ती द्वारा एक दिन कहा गया कि जो बच्चा कल अपने आप कपडे साफ कर एवं साफ सुथरा पहन कर नही आयेगा उससे केन्द्र पर ही साफ किया जायेगा दूसरे दिन बच्चों में थोडा परिवर्तन दिखा थोडे दिन बाद फिर सूचना की पुनारावृत्ति की गई और दूसरे दिन बच्चों के कपडे मुह हांथ सेन्टर पर धुलवाये गये और बच्चों द्वारा कहा गया दूसरे दिन लगभग सभी बच्चे कपडे स्वयं धुलकर पहन कर आये। इस परिवर्तन से अनेक अभिभावक भी सेन्टर पर देखने आने लगे। और कहते ''विटिया तुम तौ लडिकन कइहा खेल और कविता सिखौती हव लडिका घर पर खूब गावति है। और अभिभावकों के साथ साथ बैठके होने पर अब कुछ अभिभावक बच्चों को छोडने आने लगे है।

प्रारम्भ में बच्चे बहुत लडाई झगडा मारपीट करते थे लेकिन धीरे धीरे उनको समझाने पर लगभग सारे बच्चे अपनी सीमा में रहकर ही शैतानी करते थे। और सेन्टर बन्द होने के बाद भी नही जाते 1 जुलाई 2011 में जब स्कूल खुले तो नामांकन जागरूकता सप्ताह चलाया गया जिसमें 42 में 40 बच्चे अभिभावकों ने अपने भभिष्यों को आगे बढाने के लिये स्वयं नामाकन करवाया सभी बच्चे वर्तमान में स्कूल जाते है। और वहां की शिक्षण व्यवस्था के बदलाव में सामिल है।

शाश्वत सहभागी संस्थान जो एक स्वेछिक सामाजिक संगठन है जिसको 1996 में सरकार पंजीकृत किया गया था यह संस्थाहन मुख्यतया उत्तर प्रदेश में कार्यरत है। सामाजिक परिवर्तन के कार्यक्रमों में ग्राम्य स्तर पर समुदाय एवं संगठनों को आवश्यक सहयोग प्रदान कर उनकी क्षमता में वृद्धि करना एवं तैयार करना इस संस्था के प्रमुख उदेश्य है।

- महिलायों/पुरूषों को जागरूक करना तथा अपने कर्तव्यों के प्रति जवाब देह बनाना।
- गांव के गरीब लोगों को उनके स्वास्थ्य शिक्षा तथा रोजगार के प्रति जागरूक कर तैयार करना।
- लोगो को जागरूक करके उनमें लीडर सिप की भावना व्यक्त करना।
- लोगो को अपने अधिकार व सरकारी योजनाओं के लाभ लेने हेतु विभागों तक पहुॅच बढाना।

शाश्वत सहभागी संस्थान की उपयोगी सेवायें

- टाटा सोसल बेल्फेयर ट्रष्ट मुम्बई।
- यू एस ए आई डी (ए आई डी)
- राजीव गॉधी फाउण्डेशन दिल्ली
- नावार्ड लखनऊ
- उत्तर प्रदेश सरकार

शाश्वत सहभागी संस्थान

स्टेशन रोड, मिश्रिख, जिला, सीतापुर-261401 (उ.प्र.)

फोन नं0 : 05865-222894 मोबाईल : 94155 24982